लेखांकन व्यवसाय के प्रति चुनौतियां: कुछ अनुचिंतन*

दुव्वुरी सुब्बाराव

मुझे भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स ऑफ इंडिया) के पश्चिमी भारतीय क्षेत्रीय परिषद् के इस सम्मेलन में बोलने के लिए आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद।

2. जब मुझे इस सम्मेलन में बोलने के लिए आमंत्रित किया गया तो पहले मुझे आश्यर्च हुआ। मैं विस्मित हुआ कि रिज़र्व बैंक को सुनने में आप सम्मेलन का बहुमूल्य समय क्यों नष्ट करना चाहते हैं जबकि रिज़र्व बैंक और लेखांकन व्यवसाय में बहुत कुछ समान नहीं है, बस एक इस तथ्य को छोड़कर कि जब आंकड़े गलत हो जाते हैं तो हम दोनों की नींद उड़ जाती है। फिर मैंने अपने स्टाफ से बात की और महसूस किया कि मैं गलत था। हम पर्याप्त व्यावसायिक अंतराल को परस्पर बांटते हैं और हमारी अनेक सहभागी फर्में हैं। मैं उनमें से कुछ सहभागी फर्मों की बात करूंगा।

3. ऐसा करने से पहले मैं रिज़र्व बैंक और लेखांकन व्यवसाय में श्री वाइ.एच. मालेगाम के माध्यम से एक और संबंध को स्वीकार करूंगा जो रिज़र्व बैंक के केन्द्रीय मंडल पर 1994 से लगभग लगातार निदेशक रहे हैं, बस बीच में कुछ दिन को छोटा सा विराम रहा।श्री मालेगाम भारत के एक अग्रणी सनदी लेखाकार हैं जिन्हें व्यापक रूप से स्वीकृति मिली और जिन्होंने व्यावसायिक सक्षमता तथा अधिक महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक आचार के कठोर मानक निर्धारित किए हैं। उनके लेखांकन के विशद ज्ञान उनकी वित्तीय क्षेत्र की समय, उनकी आम जनता के हितों के प्रति निर्णय क्षमता से रिज़र्व बैंक को बहुत अधिक लाभ पहुंचा है। व्यवसाय के रूप में, आप सभी को श्री मालेगाम जैसे सहकर्मी पाकर गर्व होना चाहिए जिन्होंने लेखांकन व्यवसाय का जनता में सम्मान बढ़ाया।

लेखांकन व्यवसाय

4. लेखांकन व्यवसाय के विकास का श्रेय मिश्रित पूंजी कंपनी के प्रादुर्भाव और इसके परिणामतः प्रबंधवर्ग से स्वामित्व के अलग होने को जाता है। इस व्यवसाय से, प्रबंधन को उनकी प्रबंधकारिता के लिए सौंपी गई मालिकों की निधियों की गणना पर स्वतंत्र और प्रामाणिक राय की जरूरत पड़ी। परिणामतः इस व्यवसाय का 'उद्देश्य' इस विश्वास पर आधारित है कि यह व्यवसाय निवेश करने वाली जनता के साथ चलता है और इसका लगातार संबंध अनिवार्यतः इसी विश्वास को बनाए रखने के साथ जुड़ा हुआ है। यद्यपि, आरंभ में, इस व्यवसाय में मिश्रित पूंजी कंपनियों के शेयरधारकों को ही यह विश्वास प्रदान किया गया था परंतु आज इसमें सरकार, बैंकिंग प्रणाली, नियामक और समाज सहित बृहद् आधार पर पण्यधारकों को आश्वासन प्रदान किया जाता है।

5. रिज़र्व बैंक में हम कम से कम 2 कारणों से लेखांकन व्यवसाय पर निर्भर करते हैं। आप निस्संदेह रिज़र्व बैंक के तुलनपत्र की लेखापरीक्षा करते हैं और वाणिज्य बैंकों के तुलन पत्रों की भी लेखापरीक्षा करते हैं जिनका हम नियमन और पर्यवेक्षण करते हैं।

रिज़र्व बैंक का तुलन पत्र

6. यहां मैं रिज़र्व बैंक के तुलन पत्र पर संक्षिप्त टिप्पणी करना चाहूंगा। रिज़र्व बैंक का तुलनपत्र कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं में वाणिज्यिक संगठनों के तुलनपत्रों से अलग है। असाधारण रूप से रिज़र्व बैंक को दो तुलन पत्र रखना सांविधिक अधिदेश है - एक निर्गम विभाग का और दूसरा बैंकिंग विभाग का। निर्गम विभाग, निर्गमन, मुद्रा विनिमय और करेंसी नोटों के आहरण का काम करता है। बैंकिंग विभाग बैंकों और सरकारों के जमा खाते रखता है। निर्गम विभाग के तुलन पत्र के चहुं ओर सुरक्षा कवच बनाने का मूलाधार यह है कि हम जो मुद्रा जारी करते हैं उसके समर्थन में आस्ति-निष्ठा बनाई रखी जा सके। यह कवच सुनिश्चित करता है कि यह स्पष्ट वचन कि प्रत्येक करेंसी नोट में, जो वाहक को उसमें उल्लिखित राशि देगा, पूर्ण लेखांकन भाव में सकारा जाए। हमारे दूसरे तुलन पत्र में जो बैंकिंग विभाग का है, बैंकों और केन्द्र व राज्य सरकारों के बैंकर के रूप में हमारी भूमिका में हमारे द्वारा किए गए लेनदेन प्रतिबिम्बित होते हैं।

* भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ. दुव्वुरी सुब्बाराव द्वारा 16 दिसंबर 2011 को मुंबई में आयोजित भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान के पश्चिम भारतीय क्षेत्रीय परिषद के 26वें क्षेत्रीय सम्मेलन के अवसर पर दिया गया उद्घाटन भाषण।

7. रिज़र्व बैंक में हम अपने तुलनपत्रों की ईमानदारी बनाए रखने हेतु हमारी जिम्मेदारी के प्रति पूरी तरह सतर्क हैं। रिज़र्व बैंक के तुलन पत्रों का विश्लेषण, अंतर्निहित मौद्रिक समष्टि आर्थिक प्रवृत्तियों का अध्ययन करने के लिए पण्यधारकों के विशाल समूह द्वारा किया जाता है ताकि प्रामाणिक निर्णय लिए जा सकें। अतः हम स्पष्टता, पारदर्शिता और प्रकटन के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए बाध्य हैं और हम इस बाध्यता को पूरा करने का हर संभव प्रयास करते हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक और लेखांकन व्यवसाय

8. यद्यपि, भारतीय रिज़र्व बैंक की वित्तीय विवरणियों की आपके व्यवसाय द्वारा लेखापरीक्षा की जानी अपेक्षित है, तथापि बैंकिंग प्रणाली के नियामक और पर्यवेक्षक के रूप में रिज़र्व बैंक वाणिज्य बैंकों में प्रमुख पण्यधारक हैं जिनकी वित्तीय विवरणियों की लेखापरीक्षा आप करते हैं। हमारे विश्वास से, लेखापरीक्षा रिज़र्व बैंक के 'आंख और कान' होते हैं और पर्यवेक्षी प्रक्रिया में हमारी सहायता करने के लिए पहले ही चेतावनी संकेत देकर हमें सचेत करने हेतु हम उनपर भरोसा करते हैं। हम लेखापरीक्षकों के लेखों को अंतिम रूप देने से पूर्व, किसी भी प्रकार के नियामक मुद्दे के बारे में रिज़र्व बैंक से विचारविमर्श करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसके अतिरिक्त, बैंकों की 'वार्षिक वित्तीय निरीक्षण' की प्रक्रिया के दौरान, निरीक्षण दल नियमनपरक मामलों में चर्चा करने के लिए लेखापरीक्षकों के साथ विचार विमर्श करते हैं।

लेखांकन व्यवसाय हेतु चुनौतियां

9. चूंकि अनेक पण्यधारक लेखांकन व्यवसाय पर निर्भर करते हैं, इस व्यवसाय में यह मानना होगा कि इसे संगत और मूल्यवर्धित बने रहने के लिए पण्यधारकों के विश्वास और भरोसे को जीतते रहना होगा। हाल ही के वर्षों में स्वदेशी और वैश्विक दोनों स्तरों पर अनेकों चुनौतियां आईं, जिन्हें यदि प्रभावपूर्ण ढंग से दूर नहीं किया गया होता तो इस विश्वास को खो दिया होता। मेरे विचार से जो कुछेक प्रमुख चुनौतियां हैं, मैं उनका जिक्र करूंगा।

सक्षमता

10. पहले, सक्षमता की चुनौती। वित्तीय क्षेत्र की बढ़ती जटिलता और नए परिषकृत वित्तीय लिखतों के आने से, इस व्यवसाय के बुनियादी ज्ञान को इन उभरती पद्धतियों एवं नवोन्मेषों के साथ मिलकर अद्यतन करते रहना होगा। इसमें न केवल लगातार विषयों की समीक्षा करनी होगी अपितु अधिक महत्त्वपूर्ण है कि इसके सदस्यों के लिए सक्रिय, भलीभांति विविधीकृत और निरंतर अद्यतन कार्यक्रम बनाते रहना होगा। निरंतर व्यावसायिक शिक्षा, केवल 'बाक्स में निशान' अथवा शिक्षा या प्रशिक्षण के घंटों की संख्या में प्रतिभागिता सुनिश्चित करना ही नहीं हैं, अपितु इसका मूल्यांकन, परिणामों से संबंधित ज्ञान एवं कौशल को अद्यतन बनाकर किया जा सकता है।

11. बैंकों की लेखापरीक्षा के विशेष संदर्भ में, लेखांकन व्यवसाय के कौशलों को बेहतर बनाने के लिए रिज़र्व बैंक ने कुछ कदम उठाएं हैं। हम बैंकिंग नियमन एवं पर्यवेक्षण के क्षेत्र में नाजुक मुद्दों से बैंकों के सांविधिक लेखा परीक्षकों को अवगत करवाने हेतु वार्षिक सांविधिक लेखापरीक्षा सम्मेलन करते हैं। इस सम्मेलन में लेखापरीक्षकों को वर्तमान चिंता के विषयों पर अपनी प्रतिक्रिया हमें देने और हमारी पर्यवेक्षी व नियामक नीतियों में परिवर्तन का सुझाव देने हेतु मंच प्रदान करते हैं। हमने इसे विचारों के परस्पर आदान-प्रदान का प्रभावशाली मंच पाया है और मुझे आशा है कि इसी प्रकार आपने भी इसे महत्त्वपूर्ण पाया होगा। इस व्यवसाय में सुधार लाने के लिए मैं सुझाव आमंत्रित करता हूँ।

12. मुझे इस संबंध में यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके संस्थान के प्रयास से भारत अंतरराष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानकों (आईएफआरएस) के समकक्ष आ रहा है, जिसके परिणामतः हमारी वित्तीय लेखांकन और रिपोर्टिंग प्रणाली विश्व स्तर की हो जाएगी। निस्संदेह, आप जानते ही हैं कि आईएफआरएस अधिकांशतः मुख्य सिद्धांत है न कि विस्तृत नियम। उन्हें लागू करने में, विशेषकर वित्तीय आस्तियों एवं देयताओं के उचित मूल्य निर्धारण के क्षेत्र में निर्णय और संभवतः पार्श्विक चिंतन की जरूरत है। सुचारूरूप से और दक्षतापूर्वक आईएफआरएस के बराबर आने के लिए लेखापरीक्षा व्यवसाय में कौशल प्रतिभा को सुधारना होगा।

वैश्वीकरण

13. इस व्यवसाय की दूसरी चुनौती को इसके वैश्वीकरण के साथ देखना होगा। वैश्वीकरण का अर्थ है कि जहां तक देशों के परिचालनपरक एवं कानूनी प्रणाली का संबंध है, ये अब अलग नहीं रह सकते। इस व्यवसाय के लिए, ऐसा न केवल अंतरराष्ट्रीय लेखांकन और लेखापरीक्षा मानकों में ही प्रतिबिम्बित नहीं होता अपितु शिक्षा, नीतिशास्त्र, आदि जैसे अनेकों अन्य क्षेत्रों में भी प्रतिबिम्बित होता है। मैं समझता हूँ कि 1,80,000 सदस्यों वाली आईसीएआई विश्व की दूसरी सबसे बड़ी लेखांकन संस्था है। यह पर्याप्त नहीं है कि यह संस्थान केवल वैश्विक मानकों पर ही प्रतिक्रिया व्यक्त करे और उन्हें अपनाए। वस्तुतः, इसे आगे आकर इन मानकों को बनाने में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।

14. मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आईसीएआई के अध्यक्ष (प्रेजीडेंट) को हाल ही में अंतरराष्ट्रीय लेखाकार संघ (आईएफएसी) के मंडल का सदस्य चुना गया है और यह आईएएसबी पर एक भारतीय सदस्य है। मैं इस संस्थान की, अनेक अंतरराष्ट्रीय समितियों और परियोजनाओं में सक्रिय सहभागिता व सम्मेलन की सराहना करता हूँ जिनका लक्ष्य लेखांकन पद्धतियों व प्रक्रियाओं में सुधार लाना है। मैं बस यह आग्रह करूंगा कि आईसीएआई को आगे ऐसे क्षेत्रों में लेखांकन मानक तैयार करने में सक्रिय रूप से नेतृत्व करना चाहिए जहां उभरते बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में हमारी विशेष चिंताएं हैं।

15. वैश्वीकरण के प्रबंधन के संबंध में एक और कार्य इस व्यवसाय को करना है कि वैश्विक मंचों में भाग लेने के लिए इसकी सदस्यता के भीतर से अपेक्षित क्षमता के व्यक्तियों का चयन कैसे किया जाएगा और इस सहभागिता को व्यक्तिगत बनाने हेतु उन्हें वित्तीय और व्यवसायिक दोनों रूप से समर्थन कैसे प्रदान किया जाएगा। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इस संस्थान का प्रतिनिधित्व करने के लिए व्यक्तियों के चयन की प्रक्रिया गुणों के आधार पर और पारदर्शी होनी चाहिए।

सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी)

16. मेरी सूची में अगली चुनौती सूचना प्रौद्योगिकी है। विगत में, लेखापरीखा का एक प्रमुख उद्देश्य, वित्तीय विवरणियों की अंकगणितीय सटीकता सुनिश्चित करना था। सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से यह कार्य अब मशीनों द्वारा किया जाता है। इससे इस व्यवसाय को मूल्य की दिशा में ऊपर ले जाने में सहयोग और सहायता दोनों प्राप्त हुई। इस व्यवसाय का प्रमुख कार्य अब मूल्य निर्धारण हो गया है और इस कार्य को करने के लिए लेखापरीक्षकों के परिपक्वता, ईमानदारी, स्वतंत्रता और संतुलित निर्णय के अधिक उच्चतर स्तरों को दर्शाना होगा।

17. मैं बैंकिंग में सूचना प्रौद्योगिकी पर टिप्पणी करना चाहूंगा। पिछले दशक के दौरान, अधिकांश वाणिज्य बैंकों ने कोर बैंकिंग सॉल्यूशन को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है। इससे लेखापरीक्षकों के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों ही उत्पन्न हुए। दृश्य साक्ष्य की कमी, पता न लगने वाले प्रणाली संबधी दोषों व त्रुटियों का जोखिम और आंकड़ों की भूल भूलैया में छिपी धोखाधड़ी के रूप में चुनौतियां सामने आती है। कम्प्यूटरीकृत परिवेश में सूचना प्राप्त करना और कंप्यूटर संबंधी प्रक्रियाओं के कार्यान्वयन का जायजा लेना भी लेखापरीक्षा प्रक्रिया के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होगा। प्रश्न उठाने, रिपोर्टें लिखने और लेखापरीक्षा का मार्ग बनाने के लिए लेखांकन सॉफ्टवेयर में डाटाबेस तक पहुंचने हेतु कंप्यूटर सहायता प्राप्त लेखापरीक्षा उपकरण (सीएएटी) के बढ़ते प्रयोग के रूप में अवसर सामने आते हैं। यद्यपि, व्यवसाय में, सूचना प्रौद्योगिकी परिवेश में बैंकों की लेखापरीक्षा, की चुनौती है, यह खोज करनी होगी कि लेखापरीक्षा, कैसे इन चुनौतियों का सामना करके बैंकों की लेखापरीक्षा को और अधिक प्रभावपूर्ण और सार्थक बनाने के लिए, सूचना प्रौद्योगिकी परिवेश के अवसर खोज लगेगी।

अवसर

18. मुझे बताया गया कि एक प्रश्न, जो आपको परेशान कर रहा है, लेखांकन व्यवसाय, विशेषकर इस संस्था की बढ़ती सदस्यता को देखते हुए, हेतु अवसरों का विस्तार है। अबतक, कार्य के कुछेक क्षेत्रों में आपका एकाधिकार रहा है, उदाहरण के लिए, वित्तीय विवरणियों की लेखापरीक्षा। अवसरों को देखने और विस्तारित करने का आसान तरीका, इस एकाधिकार की स्थिति को बने रहने से रोकना है। मेरा विश्वास है कि यह एक गलती होगी। अपितु, इस व्यवसाय में, बाजार में उभरते अवसरों को पहचानने और उनका लाभ उठाने के लिए अपेक्षित कौशल को विकसित करने की आवश्यकता है।

19. मैं एक उदाहरण दूंगा। कोर बैंकिंग और केन्द्रीकृत रिकार्ड कीपिंग जैसी संकल्पनाओं से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की शाखाओं की लेखापरीक्षा की संगतता काफी कम हो गई। इन बैंकों ने रिज़र्व बैंकों को अभ्यावेदन दिया कि बैंक की शाखाओं की लेखापरीक्षा कम की जाए। इस सुझाव में गुण-दोष हैं, क्योंकि वर्तमान में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की लेखापरीक्षा की लागत, निजी क्षेत्र के तुलनीय बैंकों की लेखापरीक्षा की लागत से कहीं अधिक है। तथापि, यह संस्थान इसका विरोध कर रहा है क्योंकि इसका अर्थ इसके सदस्यों के कार्य में कमी होगा।

20. मैं मानता हूँ कि इस संबंध में संस्थान के प्रयास अविवेचित हैं। वस्तुतः इस व्यवसाय के लिए संगामी लेखापरीक्षा के क्षेत्र में अपने कौशल को बढ़ाना अधिक उचित होगा जिसकी जरूरत है, न कि ऐसे कार्य को प्रतिधारित करने के लिए आंदोलन करना जिससे मूल्य नहीं बढ़ता। इसी प्रकार, यह व्यवसाय धोखाधड़ी के निवारण और शीघ्र सूचना के दायित्व से हट गया है। ऐसी सेवा की जरूरत है और यह व्यवसाय यदि इस जरूरत को पूरा नहीं करता तो अन्य एजेन्सियां, जो ये सेवा प्रदान कर सकती हैं, लेखापरीक्षकों को हटा देंगी और उन्हें अवसर का विस्तार करने से वंचित कर देंगी।

स्वतंत्रता

21. अब मैं 'स्वतंत्रता' चुनौती के बारे में बात करूंगा। लेखाकारों की बड़ी अंतरराष्ट्रीय फर्मों के विकास से, विविध सेवाओं के प्रावधान के लिए अवसर उत्पन्न हुए। ग्राहक ऐसी बहुल सेवाओं से लाभ उठाते हैं और इन्हें महत्त्व देते हैं। तथापि, इससे इस सीमा तक विवादास्पद प्रश्न उत्पन्न होता है जिस सीमा तक इन बहुविध् सेवाओं के प्रावधान से स्वतंत्रता की संकल्पना समाप्त हो जाती है।

22. इस संदर्भ में एनरॉन का मामला याद आता है, जिसने अपने साथ लेखापरीक्षा फर्म आर्थर एन्डरसन को गिरा दिया। उर्जा, व्यापार और वितरण कंपनी एनरॉन, जो फॉर्च्यून 500 में 7वें स्थान पर थी, के अचानक गिर जाने से कंपनी द्वारा अपनाई गई लेखांकन और लेखापरीक्षा पद्धतियों के बारे में अनेक प्रश्न उठ खड़े हुए। कंपनी के तुलन पत्र से हानियों व ऋणों को, विशेष प्रयोजन इकाइयों (एसपीई) में स्थानांतरित करने हेतु कंपनी ने सर्जनात्मक लेखांकन का उपयोग किया जिससे इस ऋणग्रस्तता की सीमा छिपाई जा सकी। पता चला कि कंपनी के पास एसपीई के बारे में ऐसी कई सूचना थीं जिससे लेखापरीक्षक तुलनपत्र में उनके समेकन पर जोर दे सकते थे। एनरॉन के लेखांकन अतिक्रमण से निवेशकों को यह मानने का भ्रम हुआ कि कंपनी उससे अधिक लाभप्रद और कम सुविधा वाली है जितनी वह वास्तव में थी।

23. कंपनी के निर्माण से लेकर 16 वर्ष के लिए एंडरसन ने एनरॉन कंपनी की लेखापरीक्षा की। विशुद्ध लेखापरीक्षा के ऊपर, इसने आंतरिक-लेखापरीक्षा और परामर्शदात्री सेवाओं का भी विक्रय किया। इस प्राधिकृत सूक्ष्मदृष्टि के बावजूद, एंडरसन ने यह पता नहीं लगाया कि एनरॉन अशुद्ध वित्तीय विवरणियां प्रकाशित कर रही थी जिससे 'वित्तीय विवरणियों का एनरॉनीकरण' शब्दावली बनी। इससे हित के विरोध का प्रश्न उठता है। क्या यह वही मामला है जो आर्थर एंडरसन द्वारा एनरॉन के लिए किए गए ऋण परामर्शदात्री कार्य स्वतंत्र रूप से नहीं हो सका जिसके कारण लेखांकन मानकों में स्खलन का पता नहीं लगाया जा सका। बाद में यह भी पता चला कि लेखापरीक्षा समिति के कुछ सदस्यों ने हित के वित्तीय विरोध का सामना किया, जो अंशतः कंपनी से संबंधित धर्मार्थ दान से उत्पन्न हुए। क्या इस विरोध को रोका जा सकता था?

24. कारपोरेट इतिहास में सबसे बड़ी लेखांकन धोखाधड़ियों में से एक में, यूरोप की सबसे बड़ी डेयरी कंपनी पारमलट के गिरने में लेखांकन और लेखापरीक्षा पद्धतियों पर भी संदेह किया गया। एनरॉन की भांति पारमलट कंपनी ने भी प्रायः इसकी कई सहायक कंपनियों में से कुछ के जटिल अपतटीय संरचनाओं का उपयोग करके जटिल व्युत्पन्न सौदे किए। निवेशकों और बैंकरों ने तुलनपत्रों को समझने या इसकी देयताओं की सही सीमा का अनुमान लगाने का अत्यधिक प्रयास किया। जब तक यह कंपनी गिरी, पैरामलट कंपनी ने ऐसी अपतटीय कंपनियों से संबंधित दर्जनों व्यवस्थाएं कर ली थीं जो कंपनी की समेकित वित्तीय विवरणियों का हिस्सा नहीं बनीं।

25. इस प्रकार के उदाहरणों से 2 क्षेत्रों में प्रणालीबद्ध सुधार की आवश्यकता का पुनः समर्थन होता है। पहला लेखापरीक्षकों का नियमन है। इस व्यवसाय में वर्षों से यह तर्क दिया गया है कि मानकों को बनाए रखने के लिए स्व-नियमन और समान समीक्षा सही तरीका है। परंतु लेखापरीक्षकों की नाक के नीचे एनरॉन, पारमलट आदि के आचार से सुलभ विनियम की प्रभावकारिता पर प्रश्न उठा। इस व्यवसाय में, यदि बाह्य नियामक की घुसपैठ को रोकना चाहें तो सुधार का रास्ता निकालना होगा।

26. दूसरा सुधार, लेखांकन फर्मों में हित के विरोध को समाप्त करने की आवश्यकता है। क्या लेखापरीक्षकों पर, जिनकी वे लेखापरीक्षा करते हैं, उन्हें परामर्शदात्री सेवाएं बेचने का प्रतिबंध लग जाना चाहिए। एक विचार यह है कि कोई हित का विरोध नहीं है और यह कि बेहतर लेखापरीक्षा, नियामकों को यह आश्वासन देना है कि ऐसा प्रतिबंध अनावश्यक है। फिर भी, यदि लेखापरीक्षा में विश्वास फिर से जीतना है तो अवबोध उतना ही महत्त्वपूर्ण है। नियामक संभवतः ऐसे हित के विरोध संबंधी विषय पर कुछ सार्थक परिवर्तन की मांग करेंगे। कुल मिलाकर यह एक जटिल विषय है जिसपर निष्पक्ष रूप से विचार किए जाने की जरूरत है।

अंतर-अनुशासनपरक दृष्टिकोण

27. मेरी सूची में अगली चुनौती अंतर-अनुशासनपरक दृष्टिकोण है। इस जटिलता भरे संसार में कोई एक व्यवसाय बाजार प्रतिभागियों की सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है। न ही किसी एक व्यवसाय के लिए यह संभव है कि विशेषीकृत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए साइलो में काम करे। अतः अंतर-अनुशासनिक क्रिया न केवल अपरिहार्य है अपितु वस्तुतः वांछनीय है। परंतु इससे इसकी अपनी समस्याएं, विशेषकर अनुशासनिक अधिकार क्षेत्र में, उत्पन्न हो जाती है क्योंकि विभिन्न शासकीय निकायों में, यदि ऐसे निकाय का अस्तित्व हो, व्यावसायिक मानक अलग-अलग हो सकते हैं और ऐसे निकायों के सदस्य अलग से विनियमित हो सकते हैं।

28. हाल ही के वैश्विक वित्तीय संकट उन समस्याओं को स्पष्ट करते हैं जो अनुशासनों के संदर्भ में - इस मामले में लेखांकन व्यवसाय और विवेकपूर्ण बैंकिंग नियामकों के बीच विचारों की भिन्नता से उत्पन्न हो सकती हैं। इस बात की व्यापक आलोचना है कि लेखांकन मानक, जिनसे लेखाकारों द्वारा उचित लेखांकन पर बल दिया गया, अनकदी बाजारों और आपात् बिक्री का ध्यान नहीं रख पाए और इससे संकट, अथवा संकट की गहनता तीव्र हो गई।

29. संकट के बाद, ऋण हानि के प्रावधानन के प्रति अनुमानित हानि को देखने की इच्छा पर, विवेकपूर्ण नियामकों और लेखांकन मानक निर्धारकों के विचारों में समाभिरूपता होती है। अंतरराष्ट्रीय लेखांकन मानक बोर्ड (आईएएसबी), वित्तीय लेखांकन मानक बोर्ड (एफएएसबी) तथा बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस), इस जटिल समस्या के सामान्यतः तयशुदा समाधान ढूंढने में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

30. मैं ऋण हानि प्रावधानन के प्रश्न पर चर्चा करते समय, गैर निष्पादनकारी आस्तियों (एनपीए) को पहचानने और रिज़र्व बैंक द्वारा की गई पर्यवेक्षी निरीक्षण के निष्कर्षों की तुलना में सांविधिक लेखापरीक्षकों द्वारा यथाप्रमाणित प्रावधानन के मुद्दे पर रिज़र्व बैंक की चिंता के बारे में भी बात करना चाहूंगा। कुछेक मामलों में, रिज़र्व बैंक की राय में, सांविधिक लेखापरीक्षकों ने एनपीए की सीमा और अपेक्षित प्रावधानन को कम महत्त्व दिया है। बैंकिंग प्रणाली के पर्यवेक्षक के रूप में रिज़र्व बैंक लेखापरीक्षकों द्वारा किए कार्य पर भरोसा करता है और उसका लाभ उठाता है, इस व्यवसाय से इस मुद्दे को प्रभावपूर्ण ढंग से निपटाया जाना चाहिए। अंततोगत्वा, यह सांविधिक लेखापरीक्षकों का प्रमाणपत्र है जिसे बैंक के लेखों के बारे में 'सही और उचित' कथन के रूप में लिया गया है और सभी पण्यधारकों को प्रकट किया गया है। अतः यह प्राथमिक महत्त्व है कि बैंकों की वित्तीय विवरणियों को अंतिम रूप देते समय प्रावधानन संबंधी अपेक्षाओं को कम महत्त्व नहीं देना चाहिए।

मूल्य प्रणालियां

31. अंत में, मैं मूल्य प्रणाली के संवेदनशील और महत्त्वपूर्ण मुद्दे की बात करूंगा। हाल ही के महीनों में जनता में मूल्यों के स्खलन के बारे में देश भर में आंदोलन हुआ। एक समाज के मानदंड उसी समाज के प्रभावी वर्ग द्वारा निश्चित किए जाते हैं और लेखांकन व्यवसाय निश्चित रूप से समाज का प्रभावी वर्ग है। आप अपने व्यावसायिक आचरण में जिस मूल्य प्रणाली को अपनाते हैं उससे समाज की मूल्य प्रणाली प्रभावित होती है। दुख की बात है कि हम कई अतिक्रमण देखते हैं।

32. वर्ल्ड कॉम का मामला लीजिए। वर्ल्ड कॉम ने प्रमुख लेखांकन संबंधी अयथार्थ विवरणियां दीं जिससे कंपनी की संदिग्ध वित्तीय स्थिति छिपा ली गई। जांच पड़ताल से पता चला कि 5 तिमाहियों की अवधि में, तीन बिलियन डॉलर की लागतें गलती से पूंजी व्यय के रूप में वर्गीकृत की गईं थीं। इससे रिपोर्ट किए गए लाभ बढ़ गए जो वस्तुतः मनगढ़ंत थे।

33. यहां भारत में सत्यम कंप्यूटर सेवा का मामला इसी प्रकार का है। कंपनी के अध्यक्ष ने कंपनी के तुलनपत्र पर एक बिलियन डॉलर से भी अधिक की धोखाधड़ी होने की बात स्वीकारी, जो कई वर्षों से कंपनी के बोर्ड, इसके वरिष्ठ प्रबंधकों और निस्संदेह लेखापरीक्षकों से छिपाई गई थी। सत्यम ने नए सुपरिचित ढांचे का अनुसरण किया। लाभ को बढ़ाकर बताना, देयताओं को कम बताना और नकदी को बढ़ा चढ़ाकर बताना, जिससे तुलन पत्र में एक बड़ा छिद्र हो गया।

34. बड़े निगमों में लेखांकन संबंधी इसके अधिक कदाचारों के साथ, पण्यधारक विस्मित हैं कि बहियों की समीक्षा इस दोषी धारणा पर क्यों नहीं की जा रही है कि धोखाधड़ी सक्रिय हो सकती है। लेखांकन विशेषज्ञ यह स्पष्ट करते हैं कि एक प्रकार की अदालती लेखापरीक्षा, जो धोखाधड़ी का पुनर्निर्माण करती है, इतना समय खपाने वाली और खर्चीली होती है कि यह एक ईमानदार कारोबार को नीचे गिरा सकती है। तथापि, यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि लेखापरीक्षकों की कड़ी प्रणाली, कारपोरेट संस्कृति, जिसमें नैतिक आचार को प्रोत्साहन मिलता है और उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जाता है तथा सक्रिय और स्वतंत्र निदेशक मंडल, ऐसी धोखाधड़ी को करना कठिन और पता लगाना आसान बना सकता है और प्रकाशित परिणामों में जन-विश्वास पुनः स्थापित करने में सहायता कर सकता है।

35. इस संबंध में रिज़र्व बैंक का योगदान क्या है? अप्रैल, 1994 में प्रभावपूर्ण प्रबंधन उपकरण के रूप में आंतरिक लेखापरीक्षा और निरीक्षण कार्य का महत्त्व समझते हुए, भारतीय रिज़र्व बैंक ने सभी बैंकों को निदेशक मंडल की लेखापरीक्षा समिति की स्थापना करने के लिए कहा। यह कहने की जरूरत नहीं कि हमें निदेशक मंडल की लेखापरीक्षा समिति में कुशल और पढ़े लिखे व्यक्तियों को रखना होगा ताकि सही मायने में उनका प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग किया जा सके। तदनुसार सितंबर, 1995 में हमें बैंकों को यह सुनिश्चित

करने के लिए कहा था कि निदेशक मंडल की लेखापरीक्षा समिति में कम से कम एक गैर कार्यपालक निदेशक होना चाहिए जो सनदी लेखाकार हो। मंडल की लेखापरीक्षा समिति निर्देश देकर और बैंक में आंतरिक नियंत्रण कार्य को नियंत्रण करके अत्यधिक योगदान करती रही है। हमें बैंक के सीईओ को स्वतंत्र रखने के लिए मंडल की लेखापरीक्षा समिति से बाहर रखा है। तथापि, दूसरे उच्चतम स्तर पर संबंधित कार्यपालक निदेशक, मंडल की लेखापरीक्षा समिति के सदस्य हैं ताकि समिति की चर्चाओं में आंतरिक परिदृश्य प्रस्तुत किया जा सके। तथापि, कार्यपालक निदेशक की उपस्थिति से मंडल की लेखापरीक्षा समिति की स्वतंत्रता के साथ समझौता होता देखा जा सकता है। मैं इस संबंध में आपके विचार जानना चाहूंगा।

36. अतः मूल्य प्रणाली के अपेक्षाकृत बड़े मुद्दे पर वापस आते हुए इस व्यवसाय के समक्ष चुनौती है, अपने आचरण से, अपने में और बाद में अपने ग्राहकों में मूल्य प्रणाली की पुष्टि करने की चिंता दर्शाना और बृहत्तर नैतिक आचरण की आवश्यकता के लिए संवेदनशीलता उत्पन्न करने वाले कार्यक्रम आरंभ करना। इस संदर्भ में, मैं केवल यह दोहराना चाहूंगा कि कारोबार की दुनिया में विवेक रखने वाले के रूप में आपकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

37. अब मैं समाहार करना चाहूंगा। मैंने लेखापरीक्षा व्यवसाय और रिज़र्व बैंक के साझा व्यावसायिक क्षेत्र को संक्षिप्त रूप से पहचानने से आरंभ किया था। मैंने रिज़र्व बैंक के तुलन पत्र या वस्तुतः तुलन पत्रों की विलक्षणता की ओर संकेत किया। तत्पश्चात् मैंने मेरे विचार से कुछेक महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का उल्लेख किया जिसे इस व्यवसाय को प्रभावशाली बने रहने और संपदा क्षेत्र में मूल्य जोड़ने के लिए दूर करना होगा, जहां संगत था, मैंने रिज़र्व बैंक से, विशेषकर बैंकिंग प्रणाली के नियामक व पर्यवेक्षण के रूप में इसकी भूमिका से उत्पन्न प्रासंगिक संदर्भ और उदाहरण दिए।

38. मैं कामना करता हूँ कि अगले 2 दिन आपकी चर्चा पूरी तरह से सफल हो।